साप्ताहिक
Live not just breaTHE

दि कार्मिक पोस्ट

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/16-18

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 6, अंक : 52 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 18 अगस्त से 24 अगस्त 2021 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

आजादी की कहानी अंग्रेजो ने भारत पर लगभग 200 वर्षो तक राज किया । 1757 से ही भारतीयो और अंग्रेजों के बीच संघर्ष का उल्लेख मिलता है ।अंग्रेज भारतीयों को आपस में लड़ाकर राज करना चाहते थे। प्लासी के युद्ध में उन्होंने ऐसा ही किया । बंगाल के शासक सिराजुदौला के सेनापति मीरजाफर को राबर्ट क्लाइव ने अपनी ओर मिला लिया । उसकी गद्दारी के कारण ही अंग्रेज सफल रहे । प्रारम्भ से ही अंग्रेजो के मन में खोट था । वे सिर्फ अपना ही फायदा सोचते थे । इसी कारण वे यहाँ की जनता पर अपना स्थान नही बना पाये । जगह जगह विरोध शुरू हो गया । 1857 तक आते आते इन विरोधों ने एक क्रांति का रूप ले लिया ।

आजादी की अनोखी कहानी

29 मार्च 1857 में चर्बीयुक्त कारतूस के खिलाफ भारतीय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया । मंगलपांडे ने सर्वप्रथम आवाज उठाई । उन्होंने कारतूस चलाने से इंकार कर दिया । पलटन की सार्जेंट हडसन मंगल पांडेय को पकड़ने के लिए आगे बढ़ा । मंगल पांडेय ने उसे गोली मार दी । अंग्रेजो ने मंगल पाण्डेय को फाँसी की सजा दे दी । लेकिन मंगल पांडेय द्वारा लगाई चिंगारी बुझी नही बल्कि पूरे भारत में फैल गयी । दिल्ली में बख्त- खान के नेतृत्व में ब्रिटिश शासन को करारी चोट दी तो , कानपुर में नाना साहेब और तात्या टोपे ने , झांसी में रानी लक्ष्मी बाई ने बागडोर संभाल रखी थी । अंग्रेजो को यह संदेश बखूबी मिल गया था कि भारत में राज करना इतना आसान नही होगा । हिन्दू ,मुसलमान और सिख सभी ने इस लड़ाई में सक्रिय भागीदारी की और ब्रिटिश सरकार को उखाड़ फेकने का संकल्प लिया । 1857 की क्रांति के बाद ब्रिटिश शासन की नीतियों में मूलभूत परिवर्तन हुआ । 1 नवम्बर 1858 में रानी विक्टोरिया द्वारा यह घोषणा की गयी कि भारत का शासन ब्रिटिश के द्वारा व उनके द्वारा सेक्रेटरी आफ स्टेट से चलाया जायेगा । गवर्नर जनरल को वायसराय की पदवी दी गयी । जो अब राजा का प्रतिनिधि था । भारत पर, ब्रिटिश सर्वोच्चता का सुदृढ़ रूप स्थापित कर दिया गया । अंग्रेजो ने वफादार राजाओं, जमींदारो और स्थानीय सरदारों को अपनी सहायता दी । जबकि शिक्षित और आम जनसमूह की ओर ध्यान नही दिया गया । जिसका परिणाम यह हुआ कि ब्रिटिश शासन के प्रति घृणा बढ़ती गयी । इससे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन प्रारम्भ हुआ । इसका नेतृत्व राजा राममोहन राय ,बंकिमचंद्र चटर्जी, ईश्वर चंद्र विद्यासागर सुधारवादी के हाथ चला गया । उन्होंने राष्ट्रीय एकता की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि तैयार की । 1828 में राजा राम मोहन राय ने ब्रह्म् समाज की स्थापना की । इसी के समानांतर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नींव सुरेन्द्र नाथ बनर्जी द्वारा 1876 में कलकत्ता में भारत एशोसिएशन के गठन के साथ रखी गयी । भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का मुख्य उद्देश्य मध्यवर्ग और आम नागरिकों को संगठित कर राजनीति में आने को प्रेरित करना था । राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन 1885 मे व्योमेश चंद्र बनर्जी की अध्यक्षता मे मुंबई में हुआ ।

सदी के बदलने के साथ ही साथ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और अरविंद घोष ने स्वदेशी आंदोलन को चलाया । लोकमान्य ने नारा दिया 'स्वतन्त्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है हम इसे लेकर रहेगें ।'1907 में कांग्रेस के दो दल बन चुके थे । गरम दल और नरम दल । नरम दल का नेतृत्व गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता और दादा भाई नौराजी कर रहे थे । जबकि गरम दल का नेतृत्व बाल गंगाधर तिलक,लाल लाजपत राय, और विपिन चंद्र पाल (लाल, बाल ,पाल) कर रहे थे । गरम दल पूर्ण स्वराज की मांग कर रहा था । जबकि नरम दल ब्रिटिश राज में स्वशासन चाहता था । हालांकि आगे चल कर ये दल एक हो गए । लेकिन उनमे विचारधारा अलग ही रही । 1919 में रौलट एक्ट (ट्रायल की बिना जेल में डाल देना)के विरोध में क्रांति हुयी । जिसका परिणाम जलियां वाला बाग़ नरसंहार था । 19 अप्रैल 1919 को पंजाब के जलियां वाला बाग़ में बैसाखी के शुभ दिन में ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीति के खिलाफ अपना शांतिविरोध प्रदर्शन के लिए जलियांवाला बाग़ में एकत्र हुए थे । अचानक जनरल डायर ने निहत्थो के ऊपर अंधाधुंध गोलियां चलवा दी । जिससे हजारो लोगो की मौत हो गयी । इसका बदला क्रांतिकारी ऊधम सिंह ने जनरल डायर को मारकर लिया ।

प्रथम युद्ध के बाद (1914-1916) महात्मा गाँधी कांग्रेस के निर्विरोध नेता चुने गए । उन्होंने अहिंसा के माध्यम से देश को आज़ाद करने का मार्ग अपनाया । जिससे भारतीय जनमानस उनके साथ जुड़ा । हालांकि कुछ क्रांतिकारी उनकी इस विचारधारा से सहमत नही थे ।

सुभाष चन्द्र बोस ,भगतसिंह,चन्द्रशेखर आजाद ,बटकेश्वरदत्त जैसे क्रान्तिकारियो का मानना था कि हिंसक और उग्र तरीके से आज़ादी हासिल की जा सकती है । 1920 -1922 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 'असहयोग आंदोलन ' चलाया । जिससे भारतीय स्वतन्त्रता को एक नई ऊर्जा मिली ।

साइमन कमीशन 1927 में भारत में सुधार लाने के उद्देश्य से भारत भेजा गया ।इसमें भारत का एक भी सदस्य नही था । स्वराज्य के बारे में कोई जिक्र नही था। जिससे आम जनता भड़क गयी । मुस्लिम लीग और लाला लाजपत राय ने इसका बहिष्कार किया । इसमें आने वाले जन समूह पर अंग्रेजो द्वारा लाठी बरसायी गयी । जिससे शेर- ए-पंजाब लाला लाजपत राय को गम्भीर चोटे आयी और वे शहीद हो गए । 1929 के प्रांरभ में गांधी जी के नेतृत्व में 'अवज्ञा आंदोलन ' शुरू हुआ । जिसका लक्ष्य ब्रिटिश सरकार के आदेशों का पूर्णतया विरोध करना था । यह भी निश्चित किया गया कि भारत 26 जनवरी 1930 को स्वतन्त्रता दिवस मनायेगा । पूरे भारत में बैठकें आयोजित की गयी । कांग्रेस द्वारा झंडा फहराया गया । ब्रिटिश सरकार ने इस आंदोलन को पूर्णतया दबाने का प्रयास किया गया । गांधी और नेहरु समेत हजारों लोग जेल में डाल दिए गए ।इसके बाद ही विदेशी निरंकुश शासन के खिलाफ प्रदर्शन स्वरुप दिल्ली के असेम्बली हाल (लोकसभा) में बम फेकने के आरोप में भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को 23 मार्च 1931 को फांसी दे दी गयी ।

अगस्त 1942 में, गांधी जी ने 'अंग्रेज भारत छोड़ो ' आंदोलन की शुरूआत की । जिसमें उन्होंने नारा दिया 'करो या मरो' । इस आंदोलन ने अंग्रेजो को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया । यह आंदोलन सार्वजनिक स्थानो,रेलवे स्टेशन और सरकारी कार्यालयों में शुरू हुआ । जगह जगह तोड़-फोड़ और हिंसा से सारा तन्त्र अस्त-व्यस्त हो गया । कांग्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया गया । आंदोलन को दबाने के लिए सेना बुला ली गयी ।दूसरी तरफ सुभाष चंद्र बोस जन क्रांति के लिए कलकत्ता से विदेश जर्मनी गये । वहां उन्होंने 'आजाद हिन्द फ़ौज' की स्थापना किया । द्वितीय विश्वयुद्ध 1939 में शुरू हुआ । भारतीय नेताओ से परामर्श किये बिना भारत की ओर से ब्रिटिश के गवर्नर जनरल ने युद्ध की घोषणा कर दी । सुभाष चन्द्र ने जापान की सहायता से ब्रिटिश सेनाओ से संघर्ष किया । अंडमान और निकोबार द्वीप को ब्रिटिश के चंगुल से मुक्त कराया । 1945 में वे जापान की पराजय के बाद हवाई जहाज से सुरक्षित स्थान पर जाने के लिए चले । उनका जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो जाने के कारण उनका कुछ पता नही चला । नेता जी सुभाष चंद्र बोस की मृत्यु के बारे में आज भी रहस्य ही बना है । उनका नारा था 'तुम मुझे खून दो मै तुम्हें आजादी दूंगा ।' सुभाष चन्द्र बोस ने भारत और विदेशियों को स्वतंत्रता के संघर्ष के लिए आमंत्रित किया । द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने के बाद ब्रिटिश प्रधानमंत्री मंत्री रिचर्ड एटली के नेतृत्व में लेबर पार्टी शासन में आयी । लेबर पार्टी आजादी के लिये कुछ सहानुभूति रखती थी । 1946 में एक कैबिनेट कमीशन भारत भेजा गया । इसके बाद ही अंतरिम सरकार के निर्माण का प्रस्ताव भेजा गया ।

साभार

स्वतंत्रता के मूल्य...

मनुष्य में स्वभाव से जीवन में सुख पाने की लालसा होती है। सुख की यह तलाश तमाम तरह के बंधनों और सीमाओं के चलते जटिल और उलझन भरी हो जाती है और उससे छुटकारा पाने के लिए आदमी तरह-तरह की कोशिशें भी करता है। इसके लिए मुक्ति और निर्वाण जैसी स्थितियों की कल्पना की गई। इन पर होने वाले सोच-विचार में व्यक्ति के आत्मबोध का खास महत्व है। केवल अपने शरीर तक सीमित आत्मबोध की अपर्याप्तता की पहचान बार-बार की जाती रही है। उसे व्यापक से व्यापकतर बनाने पर जोर दिया जाता रहा है। योग, वेदांत, बौद्ध जैसे विभिन्न मत और उनके अनेक संप्रदाय विभिन्न तर्कों के सहारे भौतिक जीवन की निस्सारता और उसके परिष्कार से उत्कर्ष की साधना को अपनाने की वकालत करते आ रहे हैं। यह मानना ठीक नहीं होगा कि किसी व्यक्ति के लिए इस तरह का आत्मशोधन समाज से अलग रहकर ही संभव है। आश्रम और पुरुषार्थ जैसी अवधारणाएं व्यक्ति को देश और काल में स्थापित करती हैं। वे उसे समाज के यथार्थ से पलायन की ओर नहीं, बल्कि दायित्वों को अंगीकार करने और उनसे बांधने का काम करती हैं। व्यक्ति या किसी समुदाय का आत्मबोध यानी उसकी अस्मिता केवल उसकी सीमा ही नहीं, बल्कि उसके कृतित्व की अवधारणा और स्वतंत्रता-स्वाधीनता के बोध पर ही टिकी होती है, क्योंकि पराधीनता की स्थिति में किसी भी तरह का अपना नियंत्रण नहीं रहता, सब कुछ पराश्रित हो जाता है। व्यक्ति का अपने ऊपर कोई बस नहीं चलता और कर्ता होने का बोध जाता रहता है। ऐसे ही क्षणों में हिंदी के लोकप्रिय कवि गोस्वामी तुलसीदास को लगा कि पराधीनता में तो सुख की कल्पना ही संभव नहीं है। यहां पर यह याद रखना बेहद जरूरी है कि स्वतंत्रता किसी भी तरह निरपेक्ष स्वच्छंदता का पर्याय नहीं हो सकती। अगर ऐसा हो तो वह आत्महंता हो जाती है जैसा कि कई देशों में हुआ है। वहां प्रजातंत्र तो आया जरूर पर ठहर नहीं सका। सही अर्थों में स्वतंत्रता मिलने के साथ व्यक्ति के साथ दायित्व और कर्तव्य भी जुड़ जाते हैं। आत्मनियंत्रण और लगातार चौकसी के अभाव में स्वतंत्रता की परिकल्पना अधूरी ही रहेगी। हम खुद को आज स्वतंत्र्योत्तर युग का वासी मानते हैं। लगता है मानो स्वतंत्रता कालक्रम में एक बिंदु था, न कि कोई सतत अनुभव। ऐसा लगता है मानो पश्चिमीकरण की स्वाभाविक नियति की दिशा में आगे बढ़ती हमारी यात्रा में राजनीतिक स्वतंत्रता महज एक पड़ाव थी। आज भाषा, व्यवहार और विचार के दायरे से स्वतंत्रता, स्वाधीनता लगभग बाहर सी ढकेल दी गई है। कभी-कभी लगता है कि स्वायत्तता, आत्मगौरव और आत्मबोध की जगह हम अंग्रेजी राज के उत्तराधिकारी बनकर रह गए हैं। वैश्वीकरण के दबाव में हम मान बैठे हैं कि पश्चिमी सभ्यता अकाट्य और अपरिवर्तनीय यात्रा-पथ और भविष्य है। राजनीतिक रूप से स्वाधीन होकर भी आज हम आत्मसंशय से ग्रस्त, भारतीयता केबारे में अस्पष्ट, ज्ञान-विज्ञान के आयातक और अपनी जड़ों से कटते चले गए हैं। गांधीजी का हिंद स्वराज हमारी रीति-नीति से कब का हाशिये पर जा चुका है।बौद्धिक चर्चाओं में जिस अमूर्तीकृत भारतीय जीवन का विश्लेषण हो रहा है, वह साम्राज्यवादी आधार पर भी अप्रासंगिक है और केवल आरोपित दृष्टि को ही प्रोत्साहित कर रहा है। वह न ज्ञान से जुड़ रहा है, न समाज से और न ही कोई वैकल्पिक दिशा या राह ही ढूंढ पा रहा है। स्वदेशी या देशज विचार उपयोगी हो सकते हैं पर इसके लिए जो संकल्प और इच्छाशक्ति चाहिए वह विरल होती जा रही है और जो प्रयास हो भी रहे हैं वे अधकचरे और बेमन से हो रहे हैं। वस्तुतः स्वतंत्रता एक मूल्य है, जीवन से भी बड़ा मूल्य। धरती पर मनुष्य ही अकेला जीव है जिसके लिए उसका शारीरिक और भौतिक जीवन नाकाफी या अपर्याप्त होता है, क्योंकि वह अपनी बुद्धि के बल पर इसके पार भी झांक पाता है और कुछ मूल्यों या आदर्शों का सृजन कर पाता है। मूल्य का जगत संभावना का जगत है और इसका प्रयोजन मनुष्य को राह दिखाना और मार्ग प्रशस्त करना है। मनुष्य आहार, भोजन, निद्रा, भय और मैथुन की पशुवृत्तियों तक अपने को संकुचित न रख मूल्यों को खोजता है। उन मूल्यों को जिन पर जीवन को भी न्योछावर किया जा सके। मानव जीवन कुछ ऐसे स्पृहणीय लक्ष्यों या चाहतों के तहत संचालित होता है जिन पर कोई बंदिश नहीं होती, सिवाय खुद अपने द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के। प्रतिबंध न हों तो ये चाहतें आदमी को गलत रास्ते पर भी ले जा सकती हैं। इस विवेक के न रहने पर हम पशुवत आचरण करने लगते हैं और तात्कालिक भौतिक सुख पाने तक ही अपने आप को सीमित कर लेते हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय यानी चोरी न करना, अपरिग्रह यानी आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना, शुचिता, इंद्रियनिग्रह, धैर्य और क्षमा जैसे गुणों को धर्म के प्राणिमात्र के लिए उपयुक्त या ठीक तरह से व्यवहार के अंतर्गत शामिल कर मनुष्य को बड़ी जिम्मेदारी दी गई। धर्म व्यक्ति को अपने बारे में कम और दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करें या सामाजिक जीवन कैसे जिएं इसके बारे में अधिक बताता है। स्वतंत्रता कभी निरपेक्ष नहीं होती पर इसका गलत अर्थ लगा कर हम स्वच्छंद होते जा रहे हैं और उसका परिणाम लूट-मार, हत्या, घोटालों, त्रासदियों, अत्याचार, व्यभिचार और हिंसा की असंख्य घटनाओं के रूप में आए-दिन हमारे सामने उपस्थित

देश के युवाओं पर निर्भर भविष्य, चुनौतियां है कई...

दुनिया के किसी भी देश के विकास में युवाओं की भूमिका अहम होती है। एक अच्छा युवा ना सिर्पस एक परिवार को गढ़ता है बल्कि एक स्वच्छ समाज और एक विकासशील देश की नींव रखता है। देश का भविष्य आने वाले इन्हीं युवाओं के हाथों में होता है। आधुनिकता की चकाचौंध ने युवाओं को दिगभ्रमित कर दिया है। हर कोई आधुनिकता की नदी में इस तरह गोते लगा रहा है कि उसे मालूम ही नहीं कि उसका किनारा कहां है और वह वैससे प्राप्त होगा। भटकाव का यह दौर ना सिर्पस समाज के लिए बल्कि देश के भविष्य के लिए भी अच्छा संकेत नहीं है।

युवाओं को ना जाने कितने संघर्ष के बाद मिली इस स्वतंत्रता के मोल के पहचानना होगा और इसे सहेजने के लिए प्रयासरत रहना होगा। यह आजादी मुफ्त में मिला कोई तोहफा नहीं है। ना जाने कितने लोगों ने खून बहाया और अपनी जिन्दगियां लूटा दी तब जाकर हमें यह आजादी नसीब हुई है। यह आजादी बनी रहे और देश विकास के पंख लगाकर आगे बढ़ता चले इसके लिए युवाओं को स्वतंत्रता के सही मायने समझना ही होंगे।

भारत की स्वतंत्रता संघर्ष व सिद्धांतों से अर्जित की गई है, 200 साल तक अंग्रेजों की गुलामी से 15 अगस्त 1947 को भारत माता को आजादी मिली है। आजाद भारत ने नई गति से विकास किया और कई बुलंदियों को छूआ है। नये दौर में अब भी हमारे सामने नई चुनौतियां हैं और उनसे लड़कर हमें आगे बढ़ना है। देश का सारा दारोमदार युवाओं पर निर्भर करता है और इसके लिए शिक्षा, रोजगार और आधुनिक संसाधनों की जरूरत होती है और यह सब केन्द्र और राज्य सरकारों की सूझबूझ और अच्छी नीतियों के कारण ही संभव हो पाएगा। प्रत्येक व्यक्ति के लिए स्वतंत्रता का विशेष महत्व होता है कि हर भारतीय इस दिन को सदैव अक्षुण्य बनाए रखने के लिए तटस्थ रहे। मानव अधिकारों की सार्वभूमिक घोषणा का अनुच्छेद 19 अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार को सुनिश्चित करता है। यह स्वाधिनता का प्रसार ही है। स्वतंत्रता पर हम विचार करें तो एक खतरनाक डर दुनियाभर में पैसल रहा है वह है संस्कृतियों के आधिपत्य का डर जो दूसरे की संस्कृति को दबाना या धमकाना चाहता है। इस आशंका ने मानव प्रगति में संस्कृति की भूमिका के बारे में प्रश्न खड़े कर दिए हैं। हरेक संस्कृति में कुछ आंतरिक मूल्य निहित हैं जिन्हें एक बुनियादी मानव स्वतंत्रता के रूप में संरक्षित और प्रचारित करना जरूरी है। कोई अकेला व्यक्ति यह नहीं कर सकता केवल सार्वजनिक नीतियां ही इसका पालन करा सकती है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि स्वतंत्रता मुफ्त में मिलने वाली कोई वस्तु है। यह चेतना और जागृति मांगती है। वर्तमान वैश्विक कोरोना महामारी के संकट काल ने भारत वासियों को नई जिंदगी, नई तलाश, नई खोज के साथ आत्मनिर्भर बनाने का भी जज्बा दिया है। लॉकडाउन और संकटकाल में देश ने कई चुनौतियों का भी सामना किया है। उन कठिनाइयों की प्रेरणा लेकर अब हमें जीवन में आगे नई तकनीक, नए साधनों के साथ आगे बढ़ना होगा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कोरोना काल में एक नारा दिया था कि हमें आपदा में भी अवसर तलाशना चाहिए। उन्होंने यहां तक कहा था कि संकट के समय में भारत को आत्मनिर्भर होना चाहिए। अभी तक हम कई मामलों में दूसरे देशों और आयात नीति पर ही निर्भर रहे हैं जिसके कारण हमें कठिनाइयां झेलनी पड़ी है। स्वतंत्रता दिवस को हम राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाते हैं। 200 साल तक अंग्रेजों की गुलामी के बाद 14-15 अगस्त 1947 की मध्य रात्रि को भारत स्वतंत्र देश बना। तब दिल्ली के लाल किले पर पं. जवाहरलाल नेहरू ने पहली बार भारत का झंडा फहराया। 75 वर्षों से लगातार देश के जो भी प्रधानमंत्री होते हैं पुरानी दिल्ली के लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के बाद राष्ट्र को सम्बोधित करते हैं। इसके साथ ही तिरंगे को 21 तोपों की सलामी भी दी जाती है। देशभर में राष्ट्रगान जन-गण-मन गाया जाता है। प्रति वर्ष स्वतंत्रता दिवस मनाना भारत के स्वतंत्रता के इतिहास को जिंदा रखता है और आजादी का सही मतलब लोगों को समझाता है। 75वां स्वतंत्रता दिवस हम सब के लिए गौरव का क्षण है। देश के प्रति सम्मान व्यक्त करने का अवसर है। हमें इस मौके पर संकल्प लेना होगा कि हम हमारे संविधान की रक्षा करेंगे।

सुभाष चन्द्र बोस की जीवनी

आजाद हिन्द फौज के सूत्राधार नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म उड़ीसा राज्य के कटक स्थान पर 23 जनवरी 1897 को हुआ था। इनका परिवार बंगाल का एक सम्पन्न परिवार था। इनके पिता जानकी नाथ बोस बंगाल के एक प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध वकील थे। इनकी माता प्रभावती धार्मिक और पतिव्रता स्त्री थी। ये 14 बहन भाई थे, जिसमें से ये नौंवो स्थान पर थे।

सुभाष चन्द्र बोस का बाल्यकाल बड़ी सम्पन्नता में व्यतीत हुआ। इन्होंने कभी भी किसी भी वस्तु का अभाव नहीं देखा। इनकी आवश्यकता अनुसार प्रत्येक वस्तु इन के पास होती थी। अभाव था तो केवल माता-पिता के वात्सल्य का। इनके पिता अपने पेशे में व्यस्त रहने के कारण परिवार और बच्चों को समय नहीं दे पाते थे और माता इतने बड़े परिवार के पालन पोषण में लगी रहने के कारण इन्हें ध्यान नहीं दे पाती थी जिससे ये बाल्यकाल से ही गम्भीर स्वभाव के हो गये। ये बस अपने बड़े भाई शरत् चन्द के करीबी थे और अपनी सभी बातों और निर्णयों पर उनसे सलाह लेते थे।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

सुभाष चन्द्र बोस के पिता जानकी नाथ बोस वास्तविक रुप से बंगाल के परगना जिले के एक छोटे से गाँव के रहने वाले थे। ये वकालत करने के लिये कटक आ गये क्योंकि इनके गाँव में वकालत में सफल होने के कम अवसर थे। लेकिन कटक में इनके भाग्य ने इनका साथ दिया और सुभाष के जन्म से पहले ही ये अपने आपको वकालत में स्थापित कर चुके थे। ये अब तक एक प्रसिद्ध सरकारी वकील बन गये थे तथा नगर पालिका के प्रथम भारतीय गैर सरकारी अध्यक्ष भी चुने गये। देशभक्ति सुभाष को अपने पिता से विरासत में मिली थी। इनके पिता सरकारी अधिकारी होते हुये भी कांग्रेस के अधिवेशनों में शामिल होने के लिये जाते रहते थे। ये लोकसेवा के कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेते थे। ये खादी, स्वदेशी और राष्ट्रीय शैक्षिक संस्थाओं के पक्षधर थे।

सुभाष चन्द्र बोस की माता प्रभावती उत्तरी कलकत्ता के परंपरावादी दत्त परिवार की बेटी थी। ये बहुत ही दृढ़ इच्छाशक्ति की स्वामिनी, समझदार और व्यवहारकुशल स्त्री थी साथ ही इतने बड़े परिवार का भरण पोषण बहुत ही कुशलता से करती थी।

प्रारम्भिक शिक्षा

सुभाष चन्द्र बोस की प्रारम्भिक शिक्षा कटक के ही स्थानीय मिशनरी स्कूल में हुई। इन्हें 1902 में प्रोटेस्टेंट यूरोपियन स्कूल में प्रवेश दिलाया गया। ये स्कूल अंग्रेजी तौर-तरीके पर चलता था जिससे इस स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों की अंग्रेजी अन्य भारतीय स्कूलों के छात्रों के मुकाबले अच्छी थी। ऐसे स्कूल में पढ़ने के और भी फायदे थे जैसे अनुशासन, उचित व्यवहार और रख-रखाव आदि। इनमें भी अनुशासन और नियमबद्धता बचपन में ही स्थायी रुप से विकसित हो गयी। इस स्कूल में पढ़ते हुये इन्होंने महसूस किया कि वो और उनके साथी ऐसी अलग-अलग दुनिया में रहते हैं जिनका कभी मेल नहीं हो सकता। सुभाष शुरु से ही पढ़ाई में अच्छे नंबरों से प्रथम स्थान पर आते थे लेकिन वो खेल कूद में बिल्कुल भी अच्छे नहीं थे। जब भी किसी प्रतियोगिता में भाग लेते तो उन्हें हमेशा शिकस्त ही मिलती।

1909 में इनकी मिशनरी स्कूल से प्राइमरी की शिक्षा पूरी होने के बाद इन्हें रेवेंशॉव कॉलेजिएट में प्रवेश दिलाया गया। इस स्कूल में प्रवेश लेने के बाद बोस में व्यापक मानसिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तन आये। ये विद्यालय पूरी तरह से भारतीयता के माहौल से परिपूर्ण था। सुभाष पहले से ही प्रतिभाशाली छात्र थे, बस बांग्ला को छोड़कर सभी विषयों में अव्वल आते थे। इन्होंने बांग्ला में भी कड़ी मेहनत की और पहली वार्षिक परीक्षा में ही अच्छे अंक प्राप्त किये। बांग्ला के साथ-साथ इन्होंने संस्कृत का भी अध्ययन करना शुरु कर दिया। रेवेंशॉव स्कूल के प्रधानाचार्य (हेडमास्टर) बेनीमाधव दास का सुभाष के युवा मन पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। माधव दास ने इन्हें नैतिक मूल्यों पर चलने की शिक्षा दी साथ ही ये भी सीख दी कि असली सत्य प्रकृति में निहित है अतः इसमें स्वयं को पूरी तरह से समर्पित कर दो। जिसका परिणाम ये हुआ कि ये नदी के किनारों और टीलों व प्राकृतिक सौंदर्य से पूर्ण एकांत स्थानों को खोजकर ध्यान साधना में घंटों लीन रहने लगे। सुभाष चन्द्र के सभा और योगाचार्य के कार्यों में लगे रहने के कारण इनके परिवार वाले व्यवहार से चिन्तित होने लगे क्योंकि ये अधिक से अधिक समय अकेले बिताते थे। परिवार वालों को इनके भविष्य के बारे में चिन्ता होने लगी कि इतना होनहार और मेधावी होने के बाद भी ये पढ़ाई में पिछड़ न जाये। परिवार की आशाओं के विपरीत 1912-13 में इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा में विश्वविद्यालय में दूसरा स्थान प्राप्त किया जिससे इनके माता-पिता बहुत खुश हुये।

स्कूली जीवन में प्रथम राजनीति में प्रवेश

स्कूल के अन्तिम दिनों में सुभाष को प्रथम राजनीतिक प्रोत्साहन मिला जब इनसे मिलने कलकत्ता के एक दल (आदर्श दल) का दूत आया। उस दल का दोहरा उद्देश्य था- देश के नागरिकों का आध्यात्मिक उत्थान और राष्ट्र की सेवा। शीघ्र ही ये इस दल से जुड़ गये क्योंकि इनके विचार इस दल के उद्देश्यों से बहुत हद तक मिलते थे। इस दल का मुखिया एक डॉक्टर था जिससे बहुत लम्बे समय तक बोस सम्पर्क में रहे। ये सुभाष चन्द्र बोस के जीवन का प्रथम राजनीतिक अनुभव था जो भविष्य में इनके बहुत काम आया।

प्रारम्भिक परिवेश का विचारों पर प्रभाव- सुभाष चन्द्र बोस को पारिवारिक वातावरण में माता-पिता का बहुत अधिक प्रेम नहीं मिला जिससे अधिकांश समय अकेले व्यतीत करने के कारण बाल्यकाल में ही इनका स्वभाव गम्भीर हो गया। बचपन से ही ये मेहनती और दृढ़ संकल्प वाले थे। जब ये ईसाई मिशनरी के प्राइमरी स्कूल में पढ़ रहे थे इसी समय इन्होंने अपने व अपने सहपाठियों के बीच अन्तर को महसूस करते हुये पाया कि जैसे कि ये दो विभिन्न समाजों के बीच रह रहे हों। रेवेंशॉव स्कूल में हेडमास्टर बेनीमाधव के सम्पर्क में आने पर ये अध्यात्म की ओर मुड़ गये। 15 साल की उम्र में इन्होंने विवेकानंद के साहित्यों का गहन अध्ययन किया और उनके सिद्धान्तों को अपने जीवन में अपनाया। इन्होंने तय किया आत्मा के उद्धार के लिये खुद परिश्रम करना जीवन का उद्देश्य होना चाहिये साथ ही मानवता की सेवा, देश की सेवा है, जिस में अपना सब कुछ समर्पित कर देना चाहिये। विवेकानंद के जीवन से प्रेरणा लेकर इन्होंने 'रामकृष्ण-विवेकानंद युवाजन सभा' का गठन किया, जिसका परिवार वालों तथा समाज ने विरोध किया फिर भी इन्होंने सभा के कार्यों को जारी रखा। इस तरह युवा अवस्था में पहुँचने के समय में ही एक सीमा तक मनोवैज्ञानिक विचारों की पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी।

कलकत्ता में उच्च शिक्षा व सार्वजनिक जीवन

मैट्रिक की परीक्षा पास करने के बाद इनके परिवार जनों ने इन्हें आगे की पढ़ाई के लिये कलकत्ता भेज दिया। 1913 में इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय के सबसे प्रतिष्ठित कॉलेज प्रेजिडेंसी में एडमिशन (प्रवेश) लिया। सुभाष चन्द बोस ने यहाँ आकर बिना किसी देर के सबसे पहले आदर्श दल से सम्पर्क बनाया जिसका दूत इन से मिलने कटक आया था। उस समय इनके कॉलेज के छात्र अलग-अलग गुटों (दलों) में विभक्त थे। जिसमें से एक गुट आधुनिक ब्रिटिश राज-व्यवस्था की चापलूसी करता था, दूसरा सीधे-सादे पढ़ाकू छात्रों का था, एक दल सुभाष चन्द्र बोस का था- जो स्वयं को रामकृष्ण-विवेकानन्द का आध्यात्मिक उत्तराधिकारी मानते थे और एक अन्य गुट थाङ्क क्रान्तिकारियों का गुट।

कलकत्ता का सामाजिक परिवेश कटक के छोटे से कस्बे के वातावरण से बिल्कुल अलग था। यहाँ की आधुनिक जीवन की चमक-धमक ने अनेकों विद्यार्थियों के जीवन को आकर्षित कर विनाश की ओर ले गयी थी, लेकिन सुभाष का निर्माण तो अलग ही मिट्टी से हुआ था। ये कलकत्ता कुछ दृढ़ विचारों, सिद्धान्तों और नये उद्देश्यों के साथ आये थे। इन्होंने पहले ही निश्चय कर लिया था कि ये लकीर के फकीर नहीं बनेंगें। ये जीवन को गम्भीरता से अपनाना जानते थे। कॉलेज का जीवन शुरु करते समय इन्हें इस बात का अहसास था कि जीवन का लक्ष्य भी है और उद्देश्य भी।

जब सुभाष कटक से कलकत्ता आये थे तो इनका स्वभाव आध्यात्मिक था। ये समाज सेवा करना चाहते थे और समाज सेवा योग साधना का ही अभिन्न अंग है। ये अपना ज्ञान बढ़ाने के लिये ऐतिहासिक और धार्मिक स्थानों पर घूमने जाते थे। अपने कॉलेज के समय में बोस अरविन्द घोष के लेखन, दर्शन और उनकी यौगिक समन्वय की धारणा से प्रेरित थे। इस समय तक इनका राजनीति से कोई सीधा संबंध नहीं था। ये तरह-तरह के धार्मिक और सामाजिक कार्यों में खुद को व्यस्त रखते थे। इन्हें कॉलेज की पढ़ाई की कोई परवाह नहीं रहती क्योंकि ज्यादातर विषयों के लेक्चर इन्हें ऊबाऊ लगते थे। ये वाद-विवादों में भाग लेते थे, बाढ़ और अकाल पीड़ितों के लिये के लिये चन्दे इकट्ठा करने जैसे समाजिक कार्यों को करने में लगे रहने के कारण 1915 की इंटरमीडियेट की परीक्षा में ज्यादा अच्छे नम्बर प्राप्त नहीं कर पाये। इसके बाद इन्होंने आगे की पढ़ाई के लिये दर्शनशास्त्र को चुना और पूरी तरह से पढ़ाई में लग गये।

- साभार

महान क्रान्तिकारी विचारधारा के स्वामी चन्द्र शेखर

महान क्रान्तिकारी विचारधारा के स्वामी चन्द्र शेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 को एक आदिवासी गाँव भवरा में हुआ था। इनके पिता पं. सीताराम तिवारी और माता जगरानी देवी थी। भील बालकों के बीच पले-बढ़े होने के कारण आजाद बचपन में ही निशाना लगाने में कुशल हो गये थे। बचपन से ही आजाद कुशल निशानची और निर्भीक स्वभाव के थे। आजाद के मन में देश प्रेम की भावना कूट कूट कर भरी थी। 15 साल की आयु में ही ये असहयोग आन्दोलन के समय पहली और आखिरी बार गिरफ्तार हुये। इन्होंने जीते जी अंग्रेजों के हाथों गिरफ्तार न होने की कसम खायी थी और मरते दम तक इस कसम का निर्वहन किया। वह कहते थे फ्रआजाद हूँ,आजाद ही रहूँगा।फ्र वह अंग्रेजी शासन से घृणा करते थे और उनसे आजादी प्राप्त करने के लिये सशक्त क्रान्ति के मार्ग को पसंद करते थे।

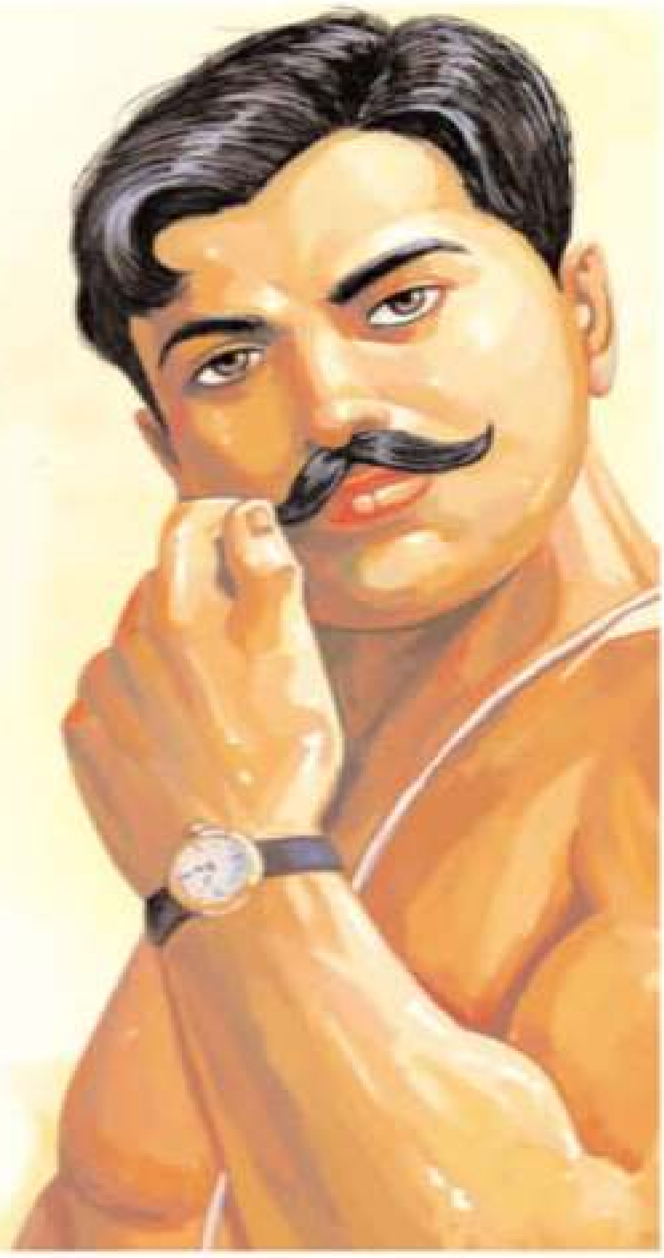

भगत सिंह इनके सबसे प्रिय सहयोगियों में से एक थे। ये भगत से बहुत प्रेम करते थे और किसी भी हाल में उन्हें खोना नहीं चाहते थे। भगत सिंह असेम्बली बम कांड के बाद गिरफ्तार किये गये और उन्हें उनके साथियों राजगुरु और सुखदेव के साथ मृत्यु दण्ड की सजा सुनायी गयी। इस दण्ड को रुकवाने के लिये आजाद 27 फरवरी 1931 इलाहबाद पं. नेहरु जी से मिलने के लिये गये, इसी दौरान किसी गुप्तचर (मुखबिर) की सूचना पर पुलिस ने इस महान क्रान्तिकारी को अल्फ्रेड पार्क में घेर लिया और आत्मसमर्पण करने को कहा। आजाद ने करीब 1 घंटे तक पुलिस सिपाहियों से मुठभेड़ का सामना किया और अपने तमंचे की आखिरी गोली खुद को मारकर आत्महत्या कर ली। इस तरह इस क्रान्ति के देवता ने 27 फरवरी 1931 में स्वतंत्रता संग्राम के हवन में स्वंय की पूर्ण आहुति दे दी। जन्म और पारिवारिक स्थिति- सशक्त क्रान्ति में विश्वास रखने वाले चन्द्र शेखर आजाद का जन्म 23 जुलाई 1906 में मध्य प्रदेश के भवरा गाँव (वर्तमान में अलीराजपुर) में हुआ था। इनके पिता पं. सीता राम तिवारी सनातन धर्म के कट्टर प्रेमी थे। इनके पिता का पैतृक गाँव कानपुर था किन्तु उनकी किशोरावस्था कानपुर के उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के बदर गाँव में व्यतीत हुई। तिवारी जी का परिवार ज्यादा सम्पन्न नहीं था। कभी-कभी तो इन्हें कई-कई दिन तक भूखा रहना पड़ता था। उन्नाव जिले में भीषण अकाल पड़ने के कारण अपने किसी रिश्तेदार (हजारी लाल) की मदद से तिवारी जी पत्नी सहित अलीराजपुर आ गये और यहाँ से फिर भवरा गाँव में। पं. सीताराम की तीन शादियाँ हुई। इनका तीसरा विवाह जगरानी देवी से हुआ। आजाद इन्हीं की पाँचवी संतान थे। आजाद के जन्म से पूर्व इनकी माँ की तीन संतानों की मृत्यु हो गयी थी। इनके एक बड़े भाई सुखदेव भी थे।

प्रारम्भिक जीवन

आजाद का प्रराम्भिक जीवन चुनौती पूर्ण था। इनकी पारिवारिक स्थिति अच्छी नहीं थी। पारिवारिक रुप से सम्पन्न न होने के कारण इन्हें दो-दो दिन तक भूखा रहना पड़ता था। चन्द्र शेखर बचपन में बहुत दुर्बल लेकिन बहुत सुन्दर थे। इनका बचपन भीलो के साथ व्यतीत हुआ। यही कारण है कि ये छोटी सी आयु में ही कुशल निशानची बन गये। आजाद बचपन से ही बहुत साहसी और निर्भीक थे। उनका पढ़ने लिखने में ज्यादा मन नहीं था। वे अपने साथियों के साथ जंगलों में निकल जाते और डाकू और पुलिस का खेल खेला करते थे। आजाद अपनी माँ के बहुत लाड़ले थे। वही वे अपने पिता से बहुत डरते भी थे। एक बार आजाद ने बाग से कुछ फल चुराकर बेच दिये, जिस बाग की इनके पिता रखवाली करते थे। पं. सीताराम बहुत आदर्शवादी थे, जब उन्हें इस बात का पता चला तो उन्होंने आजाद को जितना पीट सकते थे उतना पीटा और जब चन्द्रशेखर की माँ ने इन्हें बचाने की कोशिश की तो उन्हें भी धक्का देकर एक तरफ हटा दिया और चन्द्रशेखर को पीटते-पीटते अधमरा कर दिया। यही कारण था कि आजाद अपने पिता से बहुत अधिक कतराते थे।

चन्द्रशेखर का भाग कर बम्बई जाना

आजाद की मित्रता अलीराजपुर में एक मोती बेचने वाले से हुई, जिसने शेखर को बम्बई के बारे में रोचक कहानियाँ सुनाई और उन्हें बम्बई जाने के लिये प्रेरित किया। उसी की मदद से शेखर घर छोड़कर बम्बई भागने में सफल हो गये। किन्तु बम्बई में इनका साथ छूट गया और शेखर अकेले रह गये। इन्होंने कुछ दिन वही रहकर समुद्र तट पर जहाज रंगने का कार्य किया, और अपना जीवकोपार्जन किया। किन्तु शीघ्र ही ये वहाँ के जीवन से ऊब गये और बिना टिकट के बनारस की ट्रेन में बैठकर बनारस आ गये। कुछ विशेष जाँच न होने के कारण ये आसानी से बनारस पहुंच गये।

चन्द्रशेखर का बनारस में आगमन

बम्बई के उबाऊ जीवन को छोड़कर शेखर बनारस आ गये और पुनः अपनी शिक्षा प्रारम्भ की। यहाँ एक धर्मार्थ संस्था में प्रवेश लेकर संस्कृत पढ़ना शुरु कर दिया। यहाँ शेखर ने लघुकौमुदगी और अमरकोष का गहन अध्ययन किया। पढ़ाई के साथ ही आजाद में देश प्रेम की भी भावना जागृत हो रही थी। काशी में जहाँ कहीं भी संतसंग होता शेखर वहाँ जाते और वीर रस की कहानियों को बड़े प्रेम के साथ सुनते थे। इस दौरान वे पुस्तकालय में जाकर अखबार पढ़ते और राष्ट्रीय हलचलों की सूचना रखने लगे। बनारस में व्यवस्थित हो जाने पर चन्द्रशेखर ने अपने घर सूचना दी और परिवार वालों को निश्चिन्त रहने के लिये कहा। इस सूचना से इनके माता-पिता को कुछ संतोष हुआ।इन्हीं दिनों असहयोग आन्दोलन अपने जोरों पर था, जगह ङ्क जगह धरने और प्रदर्शन हो रहे थे। चन्द्र शेखर के मन में जो देश प्रेम की चिंगारी बचपन से सुलग रही थी उसे हवा मिल गयी और उसने आग का रुप ले लिया। उन्होंने भी सन् 1921 में, 15-20 विद्यार्थियों को इकट्ठा करके उनके साथ एक जुलूस निकाला और बनारस की मुख्य गलियों मे वन्दे मातरम भारत माता की जय, इंकलाब जिन्दाबाद, महात्मा गाँधी की जय के नारों की जय जयकार करते हुये घूमें। इन सब की आयु 13 से 15 वर्ष के बीच थी। छोटे नन्हें मुन्नों का जुलूस बड़े उत्साह और उमंग के साथ आगे बढ़ता जा रहा था, जिसका नेतृत्व स्वंय चन्द्रशेखर कर रहे थे।

जलवायु के लिए सबसे खराब है नीला हाइड्रोजन

वर्तमान में हाइड्रोजन को उच्च कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन के साथ प्राकृतिक गैस (भूरे हाइड्रोजन) में मीथेन की भाप में सुधार करके उत्पादित किया जाता है। उत्सर्जन को कम करने के लिए कार्बन कैप्चर और स्टोरेज का उपयोग किया जाता है और तथाकथित ब्लू हाइड्रोजन अथवा नीले हाइड्रोजन का उत्पादन होता है। नीले हाइड्रोजन को अक्सर कम उत्सर्जन करने वाले के रूप में उपयोग करने का सुझाव दिया जाता है।

अभी तक स्वच्छ हाइड्रोजन का उपयोग पर्यावरणीय रूप से बहुत अच्छा ऊर्जा विकल्प के रूप में देखा गया है। लेकिन अध्ययन में कहा गया है कि इससे कोयले की तुलना में अधिक ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन हो सकता है। अध्ययन में नीले हाइड्रोजन को उत्पन्न करने में कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन दोनों के उत्सर्जन की जांच की गई है। इसमें पाया गया कि कम कार्बन होने की बात तो दूर, नीले हाइड्रोजन के उत्पादन से ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन काफी अधिक है, खासकर मीथेन के निकलने के कारण। नीले हाइड्रोजन से निकलने वाली ग्रीनहाउस गैस प्राकृतिक गैस या कोयले के जलने से निकलने की तुलना में 20 फीसदी अधिक है। अध्ययनकर्ताओं ने नीले हाइड्रोजन को बहुत खराब माना है, उन्होंने कहा कि जलवायु के आधार पर इसे सही नहीं ठहराया जा सकता है। जर्नल एनर्जी साइंस एंड इंजीनियरिंग में छपे एक अध्ययन में कहा गया है कि नीला हाइड्रोजन उत्सर्जन मुक्त नहीं है। दुनिया भर में हाइड्रोजन ऊर्जा का प्रचार जोर-शोर से हो रहा है। अमेरिका को ही ले, लें तो बाइडेन का 1.2 ट्रिलियन डॉलर का बुनियादी ढांचा बिल जिसे सीनेट ने हाल ही में पारित किया, उसमें नीले हाइड्रोजन का उल्लेख नहीं किया गया है, लेकिन इसमें कम से कम चार क्षेत्रीय स्वच्छ हाइड्रोजन हब के लिए 8 बिलियन डॉलर का फंड शामिल किया गया है। लेकिन शोधकर्ताओं ने चेतावनी दी कि स्वच्छ ऊर्जा रणनीति के हिस्से के रूप में ईंधन का उपयोग करना, जिसमें कार्बन कैप्चर और स्टोरेज (सीसीएस) शामिल है। यह केवल उस सीमा तक काम करता है जहां तक कार्बन डाइऑक्साइड को भविष्य में अनिश्चित काल तक वातावरण में बिना रिसाव के लंबे समय तक संग्रहीत करना संभव हो।

अमेरिका के ऊर्जा विभाग ने इस साल जून में ‹अगली पीढ़ी के स्वच्छ हाइड्रोजन› का समर्थन करने के लिए 31 परियोजनाओं के लिए 52.5 मिलियन डॉलर की घोषणा की। 2019 की अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) की रिपोर्ट ने भी हाइड्रोजन की क्षमता को अधिक टिकाऊ और भविष्य के लिए सुरक्षित ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बताया गया था। कॉर्नेल के रॉबर्ट हॉवर्थ और स्टैनफोर्ड के मार्क जैकबसन द्वारा किए गए अध्ययन के अनुसार, हाइड्रोजन ऊर्जा के उत्पादन के लिए इसे गर्म करने तथा दबाव प्रक्रिया की आवश्यकता होती है इस सब के दौरान ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन होता है। ईंधन के रूप में प्राकृतिक गैस के उपयोग से उत्सर्जन होता है। यहां बताते चलें कि जिस प्राकृतिक गैस का उपयोग हाइड्रोजन उत्पन्न करने के लिए किया जाता है उसके उत्पादन में भी ईंधन लगता है, इस तरह यह प्रक्रिया उत्सर्जन को बढ़ावा देने वाली है। अध्ययन में कहा गया है कि नीले हाइड्रोजन से भी उत्सर्जन होता है, कार्बन-कैप्चर प्रक्रिया में भी ऊर्जा की आवश्यकता होती है। नतीजतन, यह कोई फायदा नहीं पहुंचाता है, क्योंकि कार्बन डाइऑक्साइड और मीथेन के एक साथ उत्सर्जन से यह एक और ग्रीनहाउस गैस को वातावरण में उत्सर्जित करता है। प्राकृतिक गैस, डीजल तेल या कोयले की तुलना में नीले और भूरे हाइड्रोजन से कहीं अधिक ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन होता है। अध्ययनकर्ता सुझाव देते हैं कि नीले हाइड्रोजन को एक ऊर्जा के रूप में सबसे अच्छा माना जाता है, लेकिन यह दुनिया भर में ऊर्जा अर्थव्यवस्था को वास्तव में कार्बन उत्सर्जन को कम (डीकार्बोनाइज) करने की आवश्यक कार्रवाई को पीछे धकेल सकता है।

हिमाचल में एक और भूस्खलन, चंद्रभागा नदी का प्रवाह थमने से बाढ़ का खतरा

हिमाचल के जनजातीय जिले लाहौल स्पीति में एक बार फिर कुदरत का कहर देखने को मिला है। लाहौल के नालडा गांव के पास 13 अगस्त की सुबह के समय भारी भूस्खलन की वजह से वहां से बहने वाली चंद्रभागा नदी का प्रवाह पूरी तरह रूक गया है।

लाहौल स्पीति की प्रमुख्य नदी चंद्रभागा का प्रवाह रूकने की वजह से तैयार हुई झील में कई गांवों के डूबने का खतरा खड़ा हो गया है। वहीं नदी का प्रवाह रूकने की वजह से तैयार हुई इस झील के टूटने से नालडा गांव के नीचले क्षेत्र में एक साथ भारी आने की वजह से बाढ़ का खतरा खड़ा हो गया है। प्रशासन की ओर से झील बनने के बाद सबसे अधिक प्रभावित होने वाले दो गांवों जसरथ और तडंग को खाली करवा दिया है। लाहौल निवासी शाम आजाद ने डाउन टू अर्थ को बताया कि लाहौल स्पीति में प्राकृतिक आपदाओं में दिनों-दिन बढ़ोतरी देखी जा रही है। उन्होंने बताया कि शुक्रवार सुबह हुए इस भारी भूस्खलन में बनी झील के कारण् तडंग गांव के दो घर पानी में दब गए हैं और जसरथ गांव के डूबने का खतरा भी बन गया है। प्रशासन को चाहिए कि झील का जल्द ही तोड़ा जाए, ताकि ऊपरी क्षेत्रों के साथ नदी के निचले क्षेत्रों में आने वाली भारी बाढ़ से भी बचा जा सके। जसरथ गांव के निवासी सुदर्शन जास्पा ने बताया कि जसरथ गांव और तडंग गांव में भूस्खलन की वजह से भारी खतरा पैदा हो गया है। एहतियातन गांव से लोगों को खाली करवा लिया गया है। उन्होंने कहा कि सरकार को चाहिए कि मौके की गंभीरता को समझते हुए झील से निपटने के लिए जल्द ही कार्रवाई की जाए। लाहौल स्पीति के विधायक रामलाल मारकंडा ने कहा कि भूस्खलन की वजह से बनी झील से गांवों का खतरा पैदा हो गया है। इसके लिए प्रशासन को मौके पर जाने के आदेश दिए गए हैं। इस मामले में मुख्यमंत्री से भी बात की गई है और झील बनने से उत्पन हुई विकट स्थिति से निपटने के लिए प्रयास किए जा रहे हैं और मैं खुद मौके के लिए मुख्य सचिव और डीजीपी के साथ स्थिति का जायजा लेने के लिए निकल गया हूं। इससे पहले भी पिछले माह 27 जुलाई को लाहौल स्पीति में आई भारी बाढ़ की वजह से 10 लोगों की जानें चली गई थी और इससे लाहौल का उदयपुर क्षेत्र कई दिनों तक शेष दुनिया से पूरी तरह कट गया था। बाढ़ की वजह से यातायात सुविधाएं पूरी तरह प्रभावित हुई थी और इस क्षेत्र में फसें पर्यटकों को एयलिफ्ट करना पड़ा था। वहीं 11 अगस्त को किन्नौर जिले के निगुलसरी में हुए भूस्खलन की चपेट में अभी तक 15 लोगों की मृत्यु हो चुकी है। वहीं, 13 लोगों को जिंदा रेस्क्यू कर लिया गया है। इसके अलावा अभी भी एनडीआरएफ, आईटीबीपी और पुलिस की ओर से एचआरटीसी बस में मौजूद अतिरिक्त 13 लोगों की तलाश है और रेस्क्यू ऑपरेशन अभी भी जारी रखा गया है। लाहौल स्पीति में आई इन प्राकृतिक आपदाओं से जान-माल के नुकसान के साथ सबसे अधिक असर जनजातीय क्षेत्र के लोगों की आर्थिकी पर पड़ा है। साल के छह माह तक बर्फ से ढके रहने वाले इस क्षेत्र में एक ही फसल ली जाती है, ऐसे इन प्राकृतिक आपदाओं की वजह से लोगों की खड़ी फसलें खेतों में ही खराब हो जा रही है।

साभार - डाउन टू अर्थ

मध्य प्रदेश का गौरव

भारत सरकार युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा तमोट (ओबेदुल्लागंज ब्लॉक) के श्री शुभम चौहान जी को नई दिल्ली में राष्ट्रीय युवा पुरस्कार 2018-19 से सम्मानित किया गया। यह सम्मान स्वच्छता, मतदान जागरुकता, पौधारोपण, महिला सशक्तिकरण व अन्य जनजागृति कार्यक्रमों में शुभम चौहान जी की सक्रियता और योगदान के लिए नवाजा गया है।

इंदौर जिले में पूर्ण गरिमा और उत्साह के साथ मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

इंदौर इंदौर जिले में राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस समारोह पूर्ण गरिमा, जोश, उमंग और हर्षोल्लास से मनाया गया। इंदौर के महेश गार्ड लाइन स्थित सशस्त्र पुलिस प्रशिक्षण महाविद्यालय के मैदान में आयोजित मुख्य समारोह में प्रदेश के गृह मंत्री एवं इंदौर जिले के प्रभारी डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया तथा रस्मी परेड की सलामी ली। कार्यक्रम में अपार उत्साह और उमंग के साथ राष्ट्रीय धुन के बीच जवानों ने आकर्षक परेड प्रस्तुत की। स्वतंत्रता दिवस के इस राष्ट्रीय पर्व पर जिले के प्रमुख सार्वजनिक स्थानों, शासकीय कार्यालयों और शैक्षणिक संस्थाओं में भी ध्वजारोहण किया गया।

मुख्य समारोह में मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने खुली जीप में परेड का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उनके साथ कलेक्टर श्री मनीष सिंह तथा डीआईजी श्री मनीष कपूरिया भी थे। समारोह में डॉ. मिश्रा ने मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के संदेश का वाचन किया। समारोह में सशस्त्र बलों ने स्वतंत्रता दिवस अमर रहे के नारों के साथ हर्ष फायर किये। खुले आकाश में रंगीन गुब्बारे छोड़े गये। परेड का नेतृत्व रक्षित निरीक्षक श्री जयसिंह तोमर ने किया। उनका अनुसरण टूआयसी सूबेदार श्री चंद्रेश मरावी ने किया। परेड में कुल 8 दलों ने भाग लिया। इनमें ट्रॉफिक, बीएसएफ, आरएपीटीसी, फर्स्ट बटालियन, 15वीं बटालियन, होम गार्ड तथा जिला पुलिस के महिला और पुरूष बल के प्लाटून शामिल थे। बीएसएफ तथा प्रथम वाहिनी के बैंड ने सुमधुर स्वर लहरियों के साथ राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत गीतों की संगीतमयी प्रस्तुतियाँ दी। परेड में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले दलों को पुरस्कृत किया गया। परेड के अ वर्ग में प्रथम स्थान बीएसएफ और द्वितीय स्थान आरएपीटीसी को दिया गया। ब वर्ग में प्रथम स्थान बीएसएफ के बैंड और द्वितीय स्थान प्रथम वाहिनी के बैंड को प्राप्त हुआ। समारोह में जिले में वर्षभर में उत्कृष्ठ कार्य करने वाले अधिकारी-कर्मचारियों सहित अन्य संस्थाओं के प्रतिनिधियों को मुख्य अतिथि डॉ. मिश्रा ने पुरस्कृत किया। कार्यक्रम में संभागायुक्त डॉ. पवन कुमार शर्मा, पुलिस महानिरीक्षक श्री हरिनारायणचारी मिश्र, नगर निगम आयुक्त सुश्री प्रतिभा पाल, विधायक श्री महेंद्र हार्डिया तथा श्री आकाश विजयवर्गीय, पूर्व विधायक श्री सुदर्शन गुप्ता और श्री जीतू जिराती सहित अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित थे।

कमिश्नर और कलेक्टर कार्यालय में भी हुआ ध्वजारोहण- जिले में स्वतंत्रता दिवस पूर्ण उमंग और उल्लास के साथ मनाया गया। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अशासकीय, शासकीय, सार्वजनिक भवनों और कार्यालयों में भी ध्वजारोहण किया गया। संभागायुक्त डॉ. पवन कुमार शर्मा ने कमिश्नर कार्यालय, कलेक्टर श्री मनीष सिंह ने कलेक्ट्रेट में ध्वजारोहण किया।

इंदौर संभाग के धार जिले के बाग कस्बे के युवा शिल्पकार ने देश में किया नाम रोशन

इंदौर राष्ट्रीय हस्तशिल्प पुरस्कार के लिये पारम्परिक बाग प्रिन्ट हस्तशिल्प कला में ठप्पा छपाई को नये आयाम देने वाले मध्यप्रदेश के धार जिले के छोटे से कस्बे बाग से एक मात्र युवा शिल्पी बिलाल खत्री का चयन हुआ है। इस पुरस्कार से बिलाल ने पुनः मध्यप्रदेश को गोरवान्वित किया है। आयुक्त हस्तशिल्प राष्ट्रीय वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा गठित राष्ट्रीय चयन समिति ने राष्ट्रीय पुरस्कार-2018 के लिये राज्य के युवा शिल्पकार बिलाल खत्री का चयन हेंड ब्लाक प्रिंट बांस चटाई के लिये किया है। उल्लेखनीय है कि युवा शिल्पकार बिलाल खत्री को वर्ष 2011 में राष्ट्रीय मेरिट हस्तशिल्प पुरस्कार एवं वर्ष 2018 में प्रथम विश्वकर्मा पुरस्कार से भी सम्मानित किया जा चुका है। शिल्पकार बिलाल खत्री ने राष्ट्रीय पुरस्कार के लिये बाग प्रिंट ठप्पा छपाई में बांस की चटाई प्रस्तुत की थी। इससे प्राकृतिक रंगों का समावेश के साथ-साथ ऐतिहासिक धरोहर ताजमहल और लाल किले के नमूना का प्रयोग किया गया था। शिल्पकार बिलाल खत्री दुनिया के कई देशों में अपनी पुश्तैनी बाग प्रिंट ठप्पा छपाई का प्रदर्शन भी कर चुके है।

आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश का नव निर्माण –मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान

भोपाल। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि प्रदेश के निर्माण के लिए हर नागरिक को अपना सर्वश्रेष्ठ देने का प्रयास करना होगा। प्रदेश के निर्माण के लिए जनता के साथ मिलकर निर्णय लेने के उद्देश्य से प्रदेश में जनभागीदारी मॉडल विकसित किया गया है। प्रदेश में विभिन्न वर्गों की पंचायतों का आयोजन पुनः आरंभ किया जाएगा। जनता के कल्याण की योजनाएं जनता के साथ मिलकर बनाई जाएंगी और उनका क्रियान्वयन भी जनता के माध्यम से होगा। आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश का निर्माण जनभागीदारी से किया जाएगा। हमें जनता का सहयोग चाहिए जनसहयोग के बिना अकेली सरकार प्रदेश का नव निर्माण नहीं कर सकती है।

मुख्यमंत्री आज लाल परेड ग्राउंड पर आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह के राज्यस्तरीय कार्यक्रम में ध्वजारोहण तथा परेड की सलामी के बाद जनता को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण के लिए प्रदेश के नागरिकों को ईमानदारी से अपने कर्तव्य और दायित्वों का पालन करने, कोरोना अनुकूल व्यवहार के पालन, बेटियों का सम्मान करने और स्वच्छता अभियान में भाग लेने का संकल्प लेना होगा। चौहान ने कहा कि हम मिलकर समृद्ध विकसित और आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश का निर्माण करेंगे। मैं ऐसे मध्यप्रदेश के निर्माण के लिए स्वयं को समर्पित करता हूँ। मुख्यमंत्री ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के संकल्प के अनुपालन में आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण में हमारा प्रदेश देश में प्रथम रहेगा। प्रदेश के मस्तक पर जनभागीदारी की कुम-कुम और सुशासन के अक्षत से आत्म-निर्भरता का तिलक करें। हमें कदम मिलाकर चलना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार समावेशी विकास के साथ सामाजिक न्याय के लिए प्रतिबद्ध है। अन्य पिछड़ा वर्ग का मामला हो, अनुसूचित जाति- जनजाति का कल्याण हो या महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान का विषय हो, राज्य सरकार प्रत्येक क्षेत्र में निरंतर कार्यरत है। अनुसूचित जनजाति के बहनों-भाइयों की भावनाओं, संस्कृति, जीवनमूल्य, परंपरा, रोजगार और शिक्षा के लिए 18 सितम्बर रघुनाथ शाह शंकरशाह के बलिदान दिवस से विशेष अभियान आरंभ किया जाएगा जो 15 नवम्बर भगवान बिरसा मुंडा की जयंती तक चलेगा। अभियान में कला और संस्कृति की रक्षा, रोजगार के अवसरों की उपलब्धता के साथ-साथ स्वास्थ्य रक्षा और जागरूकता के लिए विशेष गतिविधियां चलाई जाएंगी। सरकार द्वारा देवारण्य योजना प्रारंभ की जा रही है। योजना में जनजातीय बहुल क्षेत्रों में वहाँ के इको सिस्टम के अनुसार परंपरागत औषधीय पौधों और सुगन्धित पौधों को उगाने से लेकर उनकी प्रोसेसिंग,ब्रांडिंग, मार्केटिंग एवं विक्रय की सम्पूर्ण वैल्यू चेन विकसित की जाएगी। मुख्यमंत्री ने अनुसूचित जनजाति के भाई-बहनों को सामुदायिक वन प्रबंधन के अधिकार देने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने कहा कि अनुसूचित जाति वर्ग की सुरक्षा, सम्मान, रोजगार और शिक्षा की भरपूर चिंता की जाएगी। बजट में इसके लिए 17 हजार 980 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा संविधान में संशोधन कर पिछड़ा वर्ग के बहनों और भाईयों के लिए विशेष प्रावधान किए गए हैं। पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक आयोग का दर्जा दिया गया है। हमारी सरकार पिछड़ा वर्ग के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण लागू करने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी। पिछड़े वर्गों के सामाजिक, शैक्षणिक और आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए एक नया आयोग गठित किया जाएगा, जो व्यापक पैमाने पर पिछड़ा वर्ग की स्थितियों का अध्ययन कर उनकी स्थिति में सुधार के लिए अपनी अनुशंसाएँ देगा। पिछड़ा वर्ग के कल्याण के लिए हमारी सरकार कृतसंकल्पित है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सामान्य निर्धन वर्ग का कल्याण भी सुनिश्चित किया जाएगा। अल्पसंख्यक समुदाय घुम्मकड़ और अर्द्ध घुम्मकड़ को भी स्थाई प्रवेश मिले और वे समाज की मुख्यधारा में लौट आएं। इसके लिए भी विशेष प्रयास

योजना रखेगी समग्र बुनियादी ढांचा विकास की नींव...

अपने देश में छोटे किसानों की एक बड़ी संख्या है। यदि विभिन्न सरकारी कदमों के तहत ये किसान अपने पैरों पर खड़े हो सकें तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बहुत बल मिलेगा और उसका लाभ सारे देश को मिलेगा। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री की ओर से दिया जाने वाला संबोधन सारे देश का ध्यान आकर्षित करता है। इस बार यह आकर्षण इसलिए अधिक था, क्योंकि देश अपना 75वां स्वतंत्रता दिवस मना रहा था। चूंकि इस मौके पर प्रधानमंत्री कुछ विशेष घोषणाएं करते हैं इसलिए इस अवसर की महत्ता और भी बढ़ जाती है। इस बार प्रधानमंत्री ने कई महत्वपूर्ण घोषणाएं कीं। इन सबने देश का ध्यान अपनी ओर खींचा- इसलिए और भी, क्योंकि कुछ घोषणाएं बेहद उल्लेखनीय रहीं, जैसे कि सौ लाख करोड़ रुपये वाली प्रधानमंत्री गति शक्ति योजना। भारी-भरकम धनराशि वाली यह योजना समग्र बुनियादी ढांचा विकास की नींव रखेगी। इससे न केवल देश का तेजी से विकास होगा, बल्कि रोजगार के संकट का समाधान भी होगा। यह समाधान किया जाना बहुत आवश्यक हो चुका है, क्योंकि कोरोना संकट ने अन्य अनेक समस्याओं को जन्म देने के साथ रोजगार के अवसरों को भी कम करने का काम किया है। रोजगार के अवसरों को बढ़ाना वक्त की मांग और जरूरत है। यदि इस जरूरत की पूर्ति हो सके तो न केवल लाखों युवाओं का भविष्य बेहतर होगा, बल्कि अर्थव्यवस्था को भी गति मिलेगी। यह महत्वाकांक्षी योजना देश को विकास की नई ऊंचाई पर पहुंचाने के साथ ही लोगों की अपेक्षाओं को पूरा करने में सक्षम साबित हो, इसके लिए केंद्र सरकार को विशेष प्रयत्न करने होंगे। केंद्र सरकार को यह कोशिश करनी होगी कि प्रधानमंत्री गति शक्ति योजना ठीक उसी प्रकार क्रियान्वित हो सके, जैसे कि पिछले वर्षों में लाल किले की प्राचीर से की जाने वाली अन्य घोषणाएं हुई हैं। इनमें प्रमुख हैं उज्ज्वला योजना और शौचालय निर्माण योजना। इसके अलावा हर घर को नल से जल पहुंचाने की योजना भी केंद्र सरकार की सफल योजनाओं में से एक है। कुछ यही स्थिति हर गांव को बिजली पहुंचाने वाली योजना की भी है। इन सफल योजनाओं ने देश की जनता को यह भरोसा दिलाया है कि मोदी सरकार जो कुछ कहती है उसे जमीन पर उतारने में भी सक्षम साबित होती है। यदि इन्हीं सफल योजनाओं की तर्ज पर प्रधानमंत्री गति शक्ति योजना भी सफलता से अमल में लाई जा सके तो देश का कायाकल्प होना तय है। आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर प्रधानमंत्री की ओर से की जाने वाली जिस अन्य घोषणा की चर्चा होना तय है, वह है छोटे किसानों को सहारा देने की योजना। अपने देश में छोटे किसानों की एक बड़ी संख्या है। यदि विभिन्न सरकारी कदमों के तहत ये किसान अपने पैरों पर खड़े हो सकें तो ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बहुत बल मिलेगा और उसका लाभ सारे देश को मिलेगा।

इंदौर जिले की सभी 312 ग्राम पंचायतों में अन्त्योदय समितियों का हुआ गठन

इन्दौर इंदौर जिले के सभी 312 ग्राम पंचायतों में ग्राम पंचायत स्तरीय अंत्योदय समितियों का गठन किया गया है। यह समिति 11 सदस्यीय रहेगी। इन समितियों के गठन की घोषणा आज यहां स्वतंत्रता दिवस समारोह में इंदौर जिले के प्रभारी तथा गृह मंत्री डॉ नरोत्तम मिश्रा ने की। इस अवसर पर कलेक्टर श्री मनीष सिंह और डीआईजी श्री मनीष कपूरिया भी मौजूद थे। बताया गया कि यह समिति मध्यप्रदेश दीनदयाल अन्त्योदय कार्यक्रम का क्रियान्वयन नियम-2021 के तहत गठित की गई है। प्रत्येक ग्राम पंचायत में इस नियम के तहत ग्राम पंचायत स्तरीय दीनदयाल अन्त्योदय कार्यक्रम समिति के गठन का प्रावधान है। इस समिति में एक शासकीय सेवक सचिव रहेंगे। समिति की बैठक एक माह में सामान्यतः एक बार होगी। बैठक में सूत्रवार निर्धारित लक्ष्यों के विरूद्ध प्राप्त उपलब्धियों की समीक्षा की जायेगी। समिति द्वारा कार्यक्रमों में लक्ष्य एवं प्राप्त उपलब्धियों की गुणात्मक एवं संख्यात्मक समीक्षा भी की जायेगी। यह समिति निर्धारित कार्यक्रमों में जनसहभागिता को बढ़ाने के उपायों को भी क्रियान्वित करने का कार्य करेगी। प्रत्येक ग्राम पंचायत समिति में अनुसूचित जाति, जनजाति तथा महिलाओं के लिये न्यूनतम एक-एक पद आरक्षित रखा गया है। बताया गया कि इन समितियों की बैठक भी आयोजित की जा रही है।

“सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्तां हमारा हम बुलबुलें हैं इसकी ये गुलिस्तां हमारा”

75 आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वाधीनता दिवस पर प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

आज़ादी की वर्षगांठ पर अपने प्राणों का उत्सर्ग करने वाले असंख्य स्वतंत्रता सेनानियों को हम श्रद्धापूर्वक नमन करते हैं, प्रदेश में सौहार्दपूर्ण सम-समाज और आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण का अपना संकल्प दृढ़ता से दोहराते हैं।

श्री शिवराज सिंह चौहान, मुख्यमंत्री

चुनौतियों से लड़कर देता जीत का संदेश – स्वस्थ, समृद्ध आत्मनिर्भर मध्यप्रदेश

हर गरीब का अपना घर

- प्रधानमंत्री आवास योजना की 2484 करोड़ रुपये की राशि जारी।

गर्व से कर रहे खुद का व्यवसाय

- पीएम स्वनिधि योजना के माध्यम से 3 लाख 16 हजार शहरी पथ विक्रेताओं को मिला 316 करोड़ रुपये का ब्याज मुक्त ऋण।

आजीविका के अवसर

- प्रदेश में 5 लाख 54 हजार परिवारों को आजीविका स्व-सहायता समूहों से जोड़कर 4% ब्याज पर 1 हजार 400 करोड़ रुपये का बैंक ऋण उपलब्ध कराया गया।

हर कदम अन्नदाता के साथ

- कोरोना काल में रबी विपणन वर्ष 2021-22 में 17.16 लाख किसानों से 128.16 लाख मीट्रिक टन गेहूं का उपार्जन कर किसानों को 25,000 करोड़ रुपये का भुगतान।
- विभिन्न किसान हितैषी योजनाओं के माध्यम से एक लाख करोड़ रुपये से अधिक के हितलाभ किसानों को दिये गये।

सबको भोजन और पोषण

- प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के अंतर्गत 7 अगस्त को अन्नोत्सव में 1 करोड़ 15 लाख परिवारों को निःशुल्क खाद्यान्न वितरण।

स्वास्थ्य पर ध्यान

- अब तक 2.5 करोड़ लोगों को आयुष्मान कार्ड जारी। 8 लाख 50 हजार हितग्राहियों का करीब 1200 करोड़ रुपये के व्यय से निःशुल्क इलाज।

खेलों को प्रोत्साहन

- खेलो इण्डिया योजना के अंतर्गत प्रदेश में 3 बड़े खेल सेंटर और 10 छोटे खेल सेंटर मंजूर।
- टोक्यो ओलम्पिक 2021 में मध्यप्रदेश के 11 खिलाड़ियों द्वारा देश का प्रतिनिधित्व।

महिला सशक्तिकरण

- प्रदेश के सभी जिलों के 700 थानों में ऊर्जा महिला डेस्क की स्थापना।
- महिलाओं के लिये ₹ 100 करोड़ की लागत से नारी सम्मान कोष की स्थापना।
- धार्मिक स्वतंत्रता कानून 2020 लागू।

कोरोना संक्रमण प्रभावितों की मदद के कदम

- कोविड आपदा में निराश्रित बच्चों की मदद के लिये मुख्यमंत्री कोविड बाल सेवा योजना।
- कोविड आपदा में शासकीय कर्मचारी की मृत्यु होने पर परिवार को 5 लाख रुपये की वित्तीय मदद।
- मुख्यमंत्री कोविड-19 अनुकंपा नियुक्ति योजना के तहत शासकीय कर्मचारी की मृत्यु होने पर एक सदस्य को अनुकंपा नियुक्ति।
- कोविड-19 ड्यूटी पर तैनात फ्रंट लाइन वर्कर की मृत्यु हो जाने पर परिवार को 50 लाख रुपये की वित्तीय सहायता।
- मुख्यमंत्री कोविड उपचार योजना में आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को निःशुल्क कोविड उपचार की सुविधा।

D-18069/21

प्रेरणा और प्रगति का प्रदेश मध्यप्रदेश

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2021

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008